सीधी सोच, सीधी बात !

(न्यायव्यवस्था, शिक्षाव्यवस्था और सामाजिक विचारधारा बदलने के लिए)

यह एक खुला मंच है जिसके अंतर्गत कोई भी देशभक्त व्यक्ति राष्ट्र के हितमें अपनी बात रख सकता है, क्यूँकि राष्ट्रहित सर्वोपरि. इसी अंतर्गत पूरी तरहसे अभिनव,

व्यक्तिगत और सामाजिक विचारधारा बदलनेका प्रारूप!

– उददेश –

'एकत्रित, संतुलित, स्वाभिमानी और निडर हिन्दू समाज बने'

श्री. संजय ह. परदेशी , पुणे

(स्वदेशी काम करनेवाला 'परदेशी' व्यक्ति)

मो/ व्हॉटसॲप – **9423014414/9422034483**

मेल – **sanjayswadeshi6@gmail.com**

वेब – **www.newroadtransport.com**

Copyright To Mr. Sanjay H. Pardeshi (Pune) Copyright registration no. L-96819/2020

लोकतंत्र का सबसे बडा आधार :– सीधी सोच, सीधी बात..!

- हर क्षेत्र में इसकी आवश्यकता होती है. जब जब यह नही रही तब तब लोकतंत्र भीडतंत्र में बदल गया है. इसका सबसे बडा उदाहरण है, दि. २६ जनवरी २०२१ को दिल्ली के लाल किले पर हुआ देशद्रोहीयोंका नंगानाच. **मेरी पुस्तकमें मैंने यह डर पहलेसेही जताया था.** क्यूँकि लोकतंत्र माने अनुशासनहिनता नही, लोकतंत्र माने अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य के तहत देशद्रोही काम नही. लोकतंत्र और संविधानको जरूरत से ज्यादा महत्व देनेसे ही भारत में आज यह स्थिती उत्पन्न हुई है. यह वापस ना हो इसीलिए भारत के लोगोंकी व्यक्तिगत और सामाजिक विचारधारा बदलनीही चाहिए. साथ साथ दो अत्यंत आवश्यक मूलभूत व्यवस्थाओंमेंभी आमूलचूल बदलाव लाना बहुत जरूरी है. नही तो लोकतंत्र और संविधान का गलत फायदा लेकर ऐसा ही गृहयुध्द् आगे भी होगा. यह ना हो इसलिए इन दो व्यवस्थाओंके बदलाव का प्राथमिक प्रारूप अलगसे बनाया है, जिनका नाम है:–

भारत की संपूर्ण नई न्याय व्यवस्था

उद्देश :– लोगोंको त्वरित न्याय देना है, सबूत के आधार पर निर्णय नही..!

भारत की संपूर्ण नई शिक्षा व्यवस्था

उद्देश :– एक भारत, श्रेष्ठ भारत' बनने के लिए एकसमान, व्यावहारिक, आधुनिक और सक्षम शिक्षा व्यवस्था स्थापित हो.

भारत की आज की विडंबना

- सभी विकसित देशोंने अपनी मातृभाषा/राष्ट्रभाषा में पढाया इसीलिए वह विकसित हुए, उन्होंने संशोधन किए. भारत को भी यही करना होगा अन्यथा भारतावासी ना कभी बडे संशोधन कर पाएँगे और ना ही सही व्यवस्थाएँ बना पाएँगे. इसी को ध्यान में रखकर ही हम सब आगे **भारत की विडंबना** समझेंगे.
- वैसे तो भारत में बहुत समस्याएँ है. लेकिन जब तक व्यक्तिगत और सामाजिक विचारधारा नही बदलेगी तब तक किसी भी समस्यापर संपूर्ण समाधान नही मिलेगा, **क्यूँकि सोच बदलो, देश बदलेगा.** तब जाकर भारत आनेवाले वर्षोंमें **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'** बनेगा, अन्यथा नही.
- **भारत की आज की सबसे बडी विडंबनाएँ :–** गलत विचारधारा/ विचित्र कानून व्यवस्था/ पुरानी कालबाह्य व्यवस्थाएँ / गलत शिक्षाव्यवस्था / कालबाह्य, जिम्मेदारी हीन, दुर्बल शासन और प्रशासन व्यवस्था और साथ साथ गलत सोच. इसके परिणाम ⟹
- संविधान, लोकतंत्र और न्याय प्रणाली का गलत उपयोग करते हुए समाज में विसंवाद उत्पन्न होना.
- लोकतंत्र का अति फायदा उठाते हुए अपनी जिम्मेदारी से मुँह फेरना और समाज/देश के प्रति कर्तव्य का पालन ना करते हुए अनुशासनहीन होकर सिर्फ हक की बात करना और लोगोंका बुध्द्रीभेद करना.
- पुरानी घीसी पीटी अव्यावहारिक, कालबाह्य अंग्रेजी न्यायव्यवस्था और शिक्षाव्यवस्था के चलते गंदी राजनीती करना और देशहित के प्रस्ताव, कानून और कामोंका भी विरोध करना.

प्रचलित गलत व्यवस्थाएँ / विचारधाराएँ

- पाश्चात्य सभ्यता/शिक्षाव्यवस्था का अनुकरण करते हुए आधे अधूरे गुलाम होना. जैसे कि भारत आज लगभग सांख्यिकी गुलाम माने डिजिटल स्लेव्ह (**Digital Salve**) हो गया है.
- आज भारत में स्वयं का ना सर्च इंजिन है, ना मोबाईल है, ना टी.व्ही. है और ना ही अन्य इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ. लगभग हर इलेक्ट्रॉनिक वस्तू विदेशी है, और यही डर २० वर्ष पहले **'स्वदेशी आंदोलन'** के समय हमने बताया था. लेकिन दुर्भाग्यवश वही हुआ. क्यूँ? क्यूँकि ⟹
- **आज भी भारत में असत्य इतिहास पढाया जाता है, ताकि स्वराष्ट्र /स्वभाषा के प्रति हीनभाव निर्माण हो.**
- आज की शिक्षा व्यवस्था भारत को बाँटती है. जिसकी वजहसे **८० प्रतिशत भारतीय और २० प्रतिशत इंडियन (पढे लिखे बाबू लोग) तैय्यार होते हैं.**
- अंग्रेजी भाषा में शिक्षाप्रणाली और अंग्रेजियत राष्ट्र की संप्रभुता के विरूध्द् काम करती है.
- न्यायव्यवस्था में सबूत के आधार पर निर्णय होने से **'सबूत'** यह अहम मुद्दा हो जाता है, **न्याय नही.**
- अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजीयत आधारित न्यायप्रणाली सामान्य हिन्दुस्थानी को कैसे न्याय देगी?
- अंग्रेजोंने सभी व्यवस्थाएँ उनके स्वार्थ के लिए बनाई थी, जो आज कालबाह्य है. लेकिन संविधान के नाम पर सियासत की रोटी सेंकने वाले नेता और देशद्रोही बुध्दि्जीवी लोग उसको ठीक नही करेंगे.
- **ध्यान रहे**, भारत में पहली बार इस तरह का विचार स्पष्ट रूपमें मेरी पुस्तक में लिखा गया है.

प्रचलित गलत व्यवस्थाएँ / विचारधाराएँ

- स्वदेशी के आद्य प्रणेता प्रखर देशभक्त वकील लोकमान्य बाल गंगाधर टिळकजी का **'स्वतंत्रता मेरा जन्मसिध्द् अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे'**, यह वाक्य हम सब कैसे भूल सकते है? उन्होंने तब अंग्रेज सरकार को गलत नीति और गलत न्यायव्यवस्था के कारण सुनाया था के **'क्या सरकारका दिमाग जगह पर है'? और सरकार हिल गई थी.** यही आदर्श मानते हुए पिछले २५/३० वर्षोंसे मेरे जैसे अनगिनत **'स्वदेशी'** लोग यह कह रहे है कि स्वदेशी न्यायव्यवस्था, स्वदेशी शिक्षाव्यवस्था, स्वदेशी विचारधारा, स्वदेशी उत्पाद, पध्द्ती और जीवनशैली आचरण में लाओ नही तो हम सब परावलंबी होंगे.
- दुर्भाग्यवश भारतवासीयोंने ना **'टिळकजी'** की बात मानी और ना ही स्वदेशी कार्यकर्ताओंका साथ दिया. इसका भयंकर परिणाम यह हुआ के आज भी हम सब अपने ही देश में अपनी मातृभाषा/राष्ट्रभाषा में ना ठीक तरहसे शिक्षा ले सकते है और ना ही शीघ्र, सही और सस्ता न्याय हमे मिल पा रहा है.
- प्रचलित न्यायव्यवस्था एक जगह कहती है के भारत **धर्मनिरपेक्ष** देश है तो दूसरी तरफ कहती है के भारत में **सर्वधर्मसमभाव** है. कितना परस्पर विरोधी है यह! हम सब भूल गये है के सर्व धर्म सम भाव माने धर्मनिरपेक्षता नही बल्कि सभी धर्म का एक समान बर्ताव. हम सब अच्छी तरह समझ ले की सर्वधर्मसमभाव तो होना ही चाहिए लेकिन साथमें सबके लिए एक ही कानून, एक ही शिक्षा पध्द्ति और एक ही सोच भी होनी चाहिए.
- एक तरफ ५० प्रतिशत जाति आधारित आरक्षण है तो दूसरी तरफ संविधान/न्यायालय कहते है कि जाति धर्म का न्यायदान से संबंध नही. लेकिन फिर भी शुक्रवार दोपहर एक बजे मुस्लिम वकील के नमाज के लिए न्यायालय और **सबको** समझौता करना पडता है. **क्या यह दोगलापन नही है?**

भारत का वैभवशाली इतिहास

- क्या स्वतंत्रता के ७३ वर्षों में भारतमें एक भी ऐसा **'स्वदेशी मेकॉले'** नही हुआ जो अंग्रेजी व्यवस्थाएँ बदलकर भारत की प्राचीन गौरवशाली संस्कृती, सभ्यता, मान्यता, परंपरानुसार नई न्याय, शिक्षा और अन्य व्यवस्थाएँ लाएँ? उनमें कालानुरूप सुधाए करे? **उत्तर तो यही होगा के एक नहीं, अनेक हुए!**
- हमारे सबके पूर्वज विदेशी आक्रांताओके शिकार इसलिये हुए थे क्यूँकि भारत देश सोने की चिडिया था, ऐसा हमारे पूर्वज और इतिहास बता रहा है. लेकिन इसका खंडन करते हुए यह कहना चाहिए की देश सोने की चिडिया होता नहीं है, बनाना पडता है. **किसीने विरासत में नहीं दी थी यह सोने की नगरी हमे!**
- शक्तिशाली देश तो आज भी सब पर राज करते हैं, और भारत तो उस समय महाशक्तिशाली था. तो उस समय पराभव होना असंभव था. **ऐसा क्या हुआ के विदेशी आक्रांता हम पे विजयी पताका लहराते रहे?**
- हमारे कला–कौशल्य से, संस्कृती से, शिक्षा से कमाई हुई संपत्ती आज भी लूटी जा रही है, और हम संविधान मे अटके हुए है. गलत लोकतंत्र में फसे हुए है. गलत नियमोंका पालन करनेसे क्या प्राप्त होगा? देश का पतन ही होने वाला है. वैसे ही भारत मे आज भी जातिव्यवस्था को लेकर भडकाया जा रहा है. **क्या यह विनाश काले विपरीत बुध्दि नही है?**
- ध्यान रहे, भारतवासियोंको पढाया गया इतिहास अपूर्ण और असत्य है. १९४७/१९७५ के बाद, तब की सरकारने धर्मनिरपेक्षता का नारा देते हुए हिन्दुओंको और भी दुबला और तितर बितर कर दिया. फलस्वरूप आज का कुछ हिन्दू समाज देशद्रोही बुध्दीजीवी लोगोंके साथ मिलकर, खुद को धर्मनिरपेक्ष मानकर, आधा अधूरा बन गया है. **या यूँ कहो के डरपोक बन गया है?**

भारत का इतिहास और वर्तमान

- **ऐसा सब क्यूँ हुआ और क्यूँ हो रहा है? क्यूँकि हम सब भूल गये है के सर्व धर्म सम भाव माने धर्मनिरपेक्षता नही बल्कि सभी धर्म का एक समान बर्ताव. फिर भी इसके विपरित,** वर्ष १९५१ में और आज (**अक्तूबर २०२०**) में हिन्दुस्थान और पाकिस्तान में धर्म आधारित अंदाजन जनसंख्या इस प्रकार है.

हिन्दुस्थानमें

वर्ष	हिन्दू करोड	मुस्लिम करोड	ख्रिश्चन करोड	बाकी करोड	कुल करोड
१९५१	३०.३५	३.५४	०.८३	१.३८	३६.१०
२०११	९६.६२	१७.२२	२.७८	४.३८	१२१
२०२०	११०	२२	३.०	३.५	१३८.५

<u>पाकिस्तानमें</u>

वर्ष	हिन्दू करोड	मुस्लिम करोड	ख्रिश्चन	बाकी	कुल करोड
१९५१	०.०५३	३.३	बहुत कम	बहुत कम	३.३७
२०११	०.१८	१७.७			१८
२०२०	०.१६	२२.२			२२.५

भारत का इतिहास और वर्तमान

- **अक्तूबर २०२० तक अंदाजन मुस्लिम जनसंख्याः–**

बांग्लादेश	१६.५	करोड
पाकिस्तान	२२.२	करोड
हिन्दुस्थान	२२	करोड
कुल	**६० से ६१**	**करोड.**

अगर भारत का विभाजन १९४७ और १९७१ में ना होता तो अं. ६० से ६१ करोड मुस्लिम जनसंख्या भारतमें होती. जबकी हिन्दूओंकी जनसंख्या तीनो देश मिलाकर मुश्किलसे ११० से १११ करोड है. बांग्लादेश और पाकिस्तानमें तो हिन्दू ना के बराबर है. **आयी बात समझमें?**

- **विश्वमें हजारो वर्षोंसे सनातन धर्म चला आ रहा है.** खिश्चन धर्म तो (यह पंथ है – स्थापना इ.स. ०००१) २०२० वर्षोंसे चला आ रहा है. मुस्लिम धर्म (यह भी पंथ है – स्थापना इ.स. ६२२) अंदाजन १४०० वर्षोंसे चला आ रहा है. इसलिए इन दोनो पंथोंका इतिहास ज्यादा से ज्यादा इतने ही वर्षोंका है. यह नये पंथ थे, इसलिए उन्होंने सनातन धर्म पर आक्रमण करके अपना पंथ और जनसंख्या बढायी. यहाँ के मूल सनातनी हिन्दुओंको डराकर, धमकाकर, रिश्वत देकर, अत्याचार करके, जोर जबरदस्तीसे उनका धर्म परिवर्तन किया.
- हिन्दुस्थान के मूल रहिवासी सनातनी हिन्दुओंपर मुस्लिमोंका आक्रमण इ.स. ६३६ से इ.स. १६६७ तक कुल ९२ बार हुआ, और उसके बाद भी होता रहा. साथ साथ अंग्रेजोंनेभी आक्रमण किए.
- मुस्लिम और खिश्चनोंने संपूर्ण विश्वमें अपने धर्म का प्रसार करने के लिए आक्रमण के साथ अन्य गलत तरीके भी अपनाए. **फलस्वरूप आज घोषित स्वरूपमें अंदाजन ५६ देश मुस्लिम राष्ट्र हैं.**

हिन्दूओंका सत्य इतिहास

- **ध्यान रहे, अंदाजन १०० से ज्यादा देश भी खिश्चन राष्ट्र है.** दूसरी ओर आज ११० करोड जनसंख्या होने के बावजूद भी हिन्दुओंका घोषित स्वरूपमें एक भी राष्ट्र नही है. **भारत धर्मनिरपेक्ष देश है? क्यूँ? भारत हिन्दुस्थान या हिन्दुराष्ट्र क्यूँ नहीं?**
- क्यूँकि हिन्दुओंने पिछले हजारों वर्षोंमें कभी भी आक्रमण नहीं किये. इसलिए क्या हम सब धर्मनिरपेक्ष, अंग्रेजियत आधारित बिखरे हुए, डरपोक हिन्दू बने?
- अं. १४०० वर्ष से मुस्लिम और अन्य आक्रमणों के बावजूद हम सब सनातन हिन्दू और हमारी संस्कृति जीवित है चूँकि **हिन्दू वीर तो थे ही.** और इसीलिए बहुत बार मुस्लिम, अंग्रेज और अन्य लोग भी **हिन्दुओंसे** हार गये थे. **इसका मतलब हिन्दुओंने भी आक्रमण किया ही होगा, क्यूँकि वीर आखिर वीर ही होते हैं.**
- हिन्दुओंने भी मुघलोंका पराभव कई बार किया है. उदा. के तौर पर इ.स. ८०० से लेकर इ.स. १७४० तक और इ.स. १८१० तक हिन्दुओंने कई बार मुस्लिमोंका पराजय किया और अंग्रेजोंको भी मात दी.
- और एक गौरव की बात – **ऋग्वेद के ब्रहस्पति अग्यम में हिन्दू शब्द का उल्लेख इस प्रकार है :–**

  हिमलयं समारभ्य यावत् इन्दु सरोवरं। तदेवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते॥ **अर्थात :–**

  हिमालय पर्वत से शुरू होकर भारतीय महासागर तक फैला हुआ ईश्वर निर्मित देश है **"हिन्दुस्थान"**, यही वह देश है जहाँ ईश्वर समय – समय पर जन्म लेते हैं और सामाजिक सभ्यता की स्थापना करते है..!
- लेकिन मुस्लिम/खिश्चन/अंग्रेजोंकेआक्रमण बहुत ज्यादा थे, भयंकर थे और विनाशकारी थे चूँकि उनको धर्मप्रसार करना था. तो जानिए कितना धर्मप्रसार हुआ ➡

दुसरे धर्मोंका प्रसार

- कितना धर्मप्रसार हुआ? मुस्लिमोंकी और ख्रिश्चनोंकी जनसंख्या अब तक कितनी मात्रा में बढ गई?
  आइए आगे पढते है :– **विश्व में धर्म आधारित अंदाजन जनसंख्या :– अक्तुबर २०२०**

ख्रिश्चन	:– २३० करोड	मुस्लिम	:– २०० करोड	हिन्दू	:– ११० करोड
धर्मनिरपेक्ष लोग	:– ११० करोड	बुध्द्	:– ५० करोड	चिनी	:– ४० करोड
बाकी	:– ४० करोड	कुल अं	:– ७८० करोड.		

- **इ.स. १६७४** में **छत्रपती शिवाजी महाराज** का राज्याभिषेक हुआ था. उस समय वहाँ कवि भूषण उपस्थित थे. उन्होंने छत्रपती शिवाजी महाराज पर बहुत काव्य किए. लेकिन एक काव्य सब हिन्दुओंको झंझोड देगा

भूषन भनत भाग्यो कासीपति विश्वनाथ, और कौन गिनतीमें भूली गति भब की।

चारों वर्ण धर्म छोडि कलमा निवाज पढि, सिवाजी न होतो तो सुनति होत सब की॥

भूषण कह रहा है के भाग गए काशी पति विश्वनाथ भी, और अनगिनत हिन्दू डरकर मुसलमान हो गए।
चारो वर्ण के हिन्दू अपना धर्म छोडकर कलमा पढने लगते, **अगर शिवाजी नही होते तो 'सुन्नत' होती सबकी**

- उपरोक्त दो तथ्योंसेही व्यक्तिगत और सामाजिक विचारधारा बदलने की कितनी आवश्यकता है यह बात सब लोगोंको अच्छी तरह समझ में आएगी. **तो क्या करे ? कैसे करे?**
- एक ही वाक्य में सकारात्मक उपाय :– शत्रुओंकी फौज मत गिनो, अपने गददार ढूंढो, समाजमें छिपे गददारोंकी सजा ही हमारा विजय सुनिश्चित करेगी. **माने क्या...?**

ठोस उपाय

- समाजमें छिपे हुए विभिन्न प्रकारके देशद्रोही गददारोंको ढूँढो और उनको उनकी औकात दिखाओ.
- **हिन्दुओंको अपनी गुलामी मानसिकता छोडकर खुद के इतिहास/धर्म/भाषा/राष्ट्र/सभ्यता/मान्यता/ परंपरा के प्रति स्वाभिमानी बनना ही होगा. यही तो है सीधी सोच, सीधी बात..!**
- हिन्दुस्थान में कहीं ना कही हिन्दुत्ववादी लोग आप के हिस्से की लडाई दूसरोंसे लड रहे है ताकि आपके बच्चोंका भविष्य सुरक्षित रहे. इसीलिए अब देश के लिए जिंदा रहकर देश को बचाएँगे, विकसित करेंगे.
- संपूर्ण भारत में हमारी सभी वास्तुकलाएँ, ईमारतें, मंदिर, सडकें, राष्ट्रीय धरोहर और हर वह क्षेत्र जहाँ मुस्लिम/ख्रिश्चन/अंग्रेजी नाम है उन सबको बदलकर हिन्दू नाम रखना ही होगा.
- ध्यान रहे राष्ट्र/धर्म/भाषा के प्रति गर्व करनेवाला और अपनी मातृभाषा/राजभाषा में पढनेवाला व्यक्ति ही बडे बडे संशोधन कर सकता है और खुदको गौरवशाली महसूस करता है.
- इसके आगे नये हिन्दुराष्ट्र में एकसमान शिक्षापध्दती में पढते हुए, एकसमान कानून पध्द्ति आचरण में लाते हुए सभी धर्म/पंथ के लोगोंने भाईचारे से रहने की आवश्यकता होगी. साथ में देश को वैभवशाली बनानेकी एकत्रित जिम्मेदारी भी लेनी होगी. क्यूँकि देश अगर सबका है तो जिम्मेदारी भी सबकी है.
- मुस्लिम/ख्रिश्चन लोग खुदके धर्म प्रसार के लिए किसी भी हद तक कुछ भी करने के लिए तैय्यार होते हैं. इतनी कडवी विचारधारा के ख्रिश्चन और मुस्लिम लोग भारत में अत्यंत सुरक्षित थे, हैं और रहेंगे.
- **लेकिन अंतिम सबसे अहम बात, "अहिंसा परमो धर्मः धर्म हिंसा तथैवच " अर्थात :– अहिंसा सबसे बडा धर्म है और धर्म रक्षार्थ हिंसा भी उसी प्रकार श्रेष्ठ है.**

तो आईए,

हम सब मिलकर संकल्प लेते हैं कि, हम सब स्वाभिमानी हिन्दू अपनी गुलामी सोच से बाहर निकलकर, सही विचारधारा अपनाते हुए, निडर, एकत्रित और संतुलित होकर, हमारे देश की विडंबनाएँ दूर करते हुए, विचित्र रूढियाँ, विचित्र कानून पध्द्ति, गलत शिक्षा पध्द्ति दूर करते हुए और स्वार्थी नेताओंको सबक सिखाते हुए हमारे हिन्दू राष्ट्र को सामर्थ्यशाली/वैभवशाली और गौरवशाली बनाएँगे.

चूँकि सिर्फ हमारे पास ही है प्राचीन और समृध्द् 'सनातन हिन्दू धर्म'.

सोच बदलो, देश बदलेगा..! **॥ जय श्री राम ॥**

श्री. संजय ह. परदेशी मेकॅनिकल इंजीनिअर हैं. पिछले ३० वर्षोंसे अपने कारोबार में लगे हुए हैं. साथ साथ पिछले २० वर्षों से समाजसेवा और राष्ट्रसेवा करते हुए उनका लक्ष्य भारत की समस्याओंपर समाधान ढूँढना है. भारत की प्रमुख समस्याओंपर निरंतर चिंतन करते हुए लेखकने **भारत कैसे बदलें..?** और **सीधी सोच, सीधी बात..!** इस खुले मंच के तहत समस्याओंपर समाधान प्रस्तुत किए हैं. लेखक का यह दावा है कि भारत में प्रचंड जनसंख्या और संसदीय लोकतंत्र की वजहसे शासन, प्रशासन और जनता में ना कानून की दहशत है और ना स्वयंपूर्ण अनुशासन की चाहत. **इसलिए भारत की पुरानी न्यायव्यवस्था और शिक्षाव्यवस्था में आमूलचूल बदलाव लाना ही होगा जिसकी वजहसे शासन, प्रशासन और लोग अनुशासित होंगे.** साथ साथ समाज की विचारधारा में भी बदलाव आना चाहिए क्यूँकि **सोच बदलो, देश बदलेगा.** तब जाकर भारत आनेवाले वर्षोंमें **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'** बनेगा, अन्यथा नही. ***इसी के तहत लेखक ने भारत की संपूर्ण नई न्यायव्यवस्था (प्राथमिक प्रारूप) और भारत की संपूर्ण नई शिक्षाव्यवस्था (प्राथमिक प्रारूप)*** लिखी है.

साथ साथ लेखक ने सडक दुर्घटनाएँ और यातायात की समस्याओंपर पहलसे ही समाधान ढूँढकर एक योजना बनाई है, जो ***'संपूर्ण भारत की नई सडक और यातायात योजना'*** इस नाम से प्रसिध्द् हुई है. **जय हिन्द..!**

Copyright To Mr. Sanjay H. Pardeshi (Pune) Copyright registration no. L-96819/2020